CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

झुंझुनू की वर्तमान स्थिति

डॉ श्वेता फेनिन
सहायक प्राध्यापक-राजनीति विज्ञान
ग्राम पोस्ट-दिनारपुरा, कटराथल, सीकर
Email-shwetafenin52@gmail.com, Mobile-9462265360

First draft received: 12.02.2024, Reviewed: 15.02.2024, Final proof received: 18.02.2024, Accepted: 18.03.2024

सार-संक्षेप

झुंझुनू जिला सीकर जिले के उत्तर दिशा में अवस्थित है। इस शहर को जुझार सिंह नेहरा के नाम पर शासक शार्दुलसिंह शेखावत द्वारा सन् 1730 में बसाया गया था। जुझार सिंह शार्दुलसिंह शेखावत के सेना प्रमुख थे। भारत की आन राजस्थान की शान व शेखावाटी का सिरमौर के रूप में झुंझुनू जिले को जाना जाता है। अरावली पर्वतमाला से परिवेष्ठित इसके दक्षिण पूर्वी भाग को प्रकृति ने सजलतापूर्वक झरनों के प्रवाह और-फलफूलों की संघनता से - पश्चिमी भाग को स्वर्णिम रेत के धोरों की सौगात प्रदान की है। झुंझुनू -श्रृंगारित किया है तो कुदरत ने इसके उतरी जिले में उत्तराखण्ड जैसी सजलता और पर्वतीय हरियाली का वैभव है तो यहां पुरानी हवेलियों में कला, संस्कृति, साहित्य और नाना प्रकार की जीवन शैली को प्रतिबिम्बत करने वाले इन्द्रधनुषी भितिचित्रों की नयन प्रिय झांकी भी - चढ़ाव की गाथाओं का बखान करते -दीवार जहां इतिहास के उतार-आर-अंकित है। यहां के भव्य राजप्रसादों के दर प्रतीत होते हैं वहीं कलात्मक मीनारों वाले कुओं, आकर्षक छतरियों, विशाल काय बावड़ियों, नयनाभिराम जोहड़ों व तालाबों तथा ऐतिहासिक किलों और स्मारकों में छुपा यहाँ का गौरवशाली अतीत स्वयं अपने आप में एक अविस्मरणीय दस्तावेज के समान परिलक्षित होता है.

मुख्य-शब्द : *जी–20, भारत, सतत विकास, अध्यक्षता, लोकतांत्रिक, वैश्विक दक्षिण, वसुधैव कुटुम्बकम आदि.*

परिचय

शेखावाटी क्षेत्र में मूलरूप से सीकर व झुंझुनू जिलों को शामिल किया जाता है। सीकर जिले को शेखावाटी का प्रवेश द्वार या हृदय स्थल के नाम से भी जाना जाता है। जिले को शिक्षा नगरी के रूप में भी प्रसिद्धि हासिल है। इस जिले के उतर में झुंझुनू, उत्तरपश्चिम में चुरू-, दक्षिण-पूर्व दिशा में जयपुर जिला सीमा बनाता है। -पश्चिम में नागौर व दक्षिण जिले को वीरभान ने बसाया था इसलिए सीकर का पुराना नाम 'वीरभान का बास' था। राजा माधोसिंह ने इसको वर्तमान स्वरूप प्रदान कर सीकर नाम रखा था।[1]

झुंझुनू जिला सीकर जिले के उतर दिशा में अवस्थित है। इस शहर को जुझार सिंह नेहरा के नाम पर शासक शार्दुलसिंह शेखावत द्वारा सन् 1730 में बसाया गया था। जुझार सिंह शार्दुलसिंह शेखावत के सेना प्रमुख थे। भारत की आन राजस्थान की शान व शेखावाटी का सिरमौर के रूप में झुंझुनू जिले को जाना जाता है। अरावली पर्वतमाला से परिवेष्ठित इसके दक्षिणपूर्वी भाग को प्रकृति ने सजलतापूर्वक झरनों के - फूलों की संघनता से श्रृंगारित किया है तो कुदरत ने -प्रवाह और फल पश्चिमी भाग को स्वर्णिम रेत के धोरों की सौगात प्रदान -इसके उतरी जि की है। झुंझुनूले में उत्तराखण्ड जैसी सजलता और पर्वतीय हरियाली का वैभव है तो यहां पुरानी हवेलियों में कला, संस्कृति, साहित्य और नाना प्रकार की जीवन शैली को प्रतिबिम्बत करने वाले इन्द्रधनुषी भितिचित्रों की नयन प्रिय झांकी भी अंकित है। यहां के भव्य - दी-आर-राजप्रसादों के दरवार जहां इतिहास के उतारचढ़ाव की - गाथाओं का बखान करते प्रतीत होते हैं वहीं कलात्मक मीनारों वाले कुओं, आकर्षक छतरियों, विशाल काय बावड़ियों, नयनाभिराम जोहड़ों व तालाबों तथा ऐतिहासिक किलों और स्मारकों में छुपा यहाँ का गौरवशाली अतीत स्वयं अपने आप में एक अविस्मरणीय दस्तावेज के समान परिलक्षित होता है।[2]

धार्मिक और साम्प्रदायिक सद्भाव से अनुप्रमाणित, नयनप्रिय पर्यटकीय वैभव से अलंकृत, देश¬ प्रेम और समाज सुधार की अनुकरणीय परम्पराओं से पल्लवित, समृद्धशाली लोक संस्कृति से विभूषित श्रम और स्वाभिमान भरे व्यक्तित्व से अंगीकृत तथा शिक्षा विकास और प्रगतिषीलता से आहलादित झुंझुनू जिले का गौरव एक सम्पूर्ण और

[1] शार्दुल सिंह शेखावत, सीकर का इतिहास, पृ .9

[2] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ . 3-4 वर्ष-2017

समग्र परिवेश का परिचायक है। इस माटी के कणकण में शौर्य-, संघर्ष स्वाभिमान और समरसता की सुगंध विद्यमान है।[3]

झुंझुनू जिले के साहित्यकारों और कलाकारों ने इस माटी की गंध को परवान चढ़ाने तथा यहां के आचारविचार और संस्कारों को राष्ट्रीय - पहचान दिलाने में प्रशंसनीय योगदान दिया है। चंग व गींदड़, लोक नृत्यों व अलगोजों की स्वर लहरियों तथा सामाजिक उत्सवों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में न केवल जीवन की मधुरता और कर्ण प्रियता है अपितु समद्ध लोक परम्पराओं का दिग्दर्शन भी है। यहां की मातृ शक्ति ने स्त्री शिक्षा प्रसार की ऊंचाईयों को छूते हुए महिला समाज को प्रेरणा प्रदान की तो ग्रामीण परिवेश में पल बढ़ कर यहां के खिलाड़ियों ने भी इस धरती का मान बढ़ाया है।[4]

इस जिले को भारतीय सेनाओं में सर्वाधिक सैनिक भागीदारी का गौरव प्राप्त है। इस धरती के लाडलों ने मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान और बहादुरी के कीर्तिमान स्थापित किये हैं तथा 1948 में जम्मूकश्मीर की - रक्षा से लेकर गत कारगिल संघर्ष तक प्रत्येक युद्ध और रक्षा ऑपरेशन अनु में अपनी वीरता और शहादत केकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। इसी माटी में जन्में और पले धनपतियों ने राष्ट्र के औद्योगिक और आर्थिक विकास में जहां नित नये आयाम स्थापित किये हैं वहीं विषम परिस्थितियों में यहां के मेहनतकश किसानों ने भी अपने श्रम साध्य जीवन की मिसाल कायम की है।[5]

वर्तमान में झुंझुनू जिला राजस्थान राज्य के उतरपूर्वी भाग में स्थित - है। जिसका क्षेत्रफल5929 वर्ग किलोमीटर है। राज्य में यह जिला 270.38‘ से 280.31‘ उतरी अक्षांश तक व 750.02‘ से 760.06‘ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।[6] जिला राजस्थान की राजधानी जयपुर से उतरीपूर्वी- दिशा में 185 किलोमीटर तथा देश की राजधानी दिल्ली से 260 किलोमीटर उतरपश्चिम दिशा में स्थित हैं। राजस्थान के जनपद - का प्रमुख स्थल झुंझुनू पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध शहर है। जिले से पश्चिम में बीकानेर, जोधपुर पूर्व में अलवर, धौलपुर, भरतपुर जबकि हरियाणा राज्य के रेवाड़ी, नारनौल भी जुड़े हैं तो चुरू, सीकर सबसे नजदीक जिला मुख्यालय से जुड़ा है।[7] नगर परिषद् केवल एक ही है।

जिले में नगरपालिकाओं की संख्या ग्यारह है जिनमें बगड़, चिड़ावा, सूरजगढ, खेतड़ी, पिलानी, विद्या विहार, उदयपुरवाटी, नवलगढ, मुकन्दगढ़, मण्डावा व बिसाऊ है। झुंझुनू जिला एक लोकसभा क्षेत्र है जिसमें जिले के साथसाथ सीकर जिले का फतेहपुर विधानसभा क्षेत्र - भी शामिल किया जाता है। झुंझुनू जिले में झुंझुनू,पिलानी ,खेतड़ी ,उदयपुरवाटी, मण्डावा, नवलगढ़ एवं सूरजगढ कुल सात विधान सभा क्षेत्र स्थित हैं वही जिले में झुंझुनू ,चिड़ावा, खेतड़ी, उदयपुरवाटी, बुहाना, मलसीसर, नवलगढ एवं सूरजगढ कुल आठ उपखण्ड क्षेत्र है। ये सभी उपखण्ड वर्तमान में तहसील हैं झुंझुनू जिलें को पांच उप तहसीलों में बांटते है जो मण्डावा, मुकुन्दगढ़, बिसाऊ, गुढ़ागौरजी व सिंघाना है। वर्तमान झुंझुनू जिले में कुल आठ पंचायत समितियां झुंझुनू, चिड़ावा, खेतड़ी, उदयपुरवाटी, बुहाना, अलसीसर, नवलगढ़ व सूरजगढ हैं ।[8]

जनसंख्या आंकड़े

एक निश्चित समय के बाद जनगणना भारत में की जाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 के अनुसार प्रत्येक 10 वर्ष पश्चात् जनगणना करने एवं विवरण प्रस्तुत करने का प्रावधान है। झुंझुनू जिले के आधारभूत जनगणना के आंकड़े वर्ष 2011 के अनुसार निम्नलिखित हैं [9]

1	कुल जनसंख्या	2137045
2	कुल पुरूष	1095896
3	कुल महिलाएँ	1041149
4	ग्रामीण	1647966
5	शहरी	489079
6	अनुसूचित जाति	360709
7	अनुसूचित जनजाति	41629
8	जनसंख्या घनत्व (प्रतिवार्ग किलोमीटर)	361
9	लिंगानुपात (प्रतिहजार पुरूष)	950
10	कुल आबाद गांव)2014-15)	952
11	गैर आबाद गांव)2014-15)	01
12	ग्राम पंचायत	301

साक्षरता

साक्षरता का अर्थ है साक्षर होना अर्थात् पढ़ने और लिखने की क्षमता से सम्पन्न होना है। अलगअलग मानक -अलग देशों में साक्षरता के अलग- हैं। भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार अगर कोई व्यक्ति अपना नाम लिखने और पढ़ने की योग्यता हासिल कर लेता है तो उसे साक्षरमाना जाता है। किसी देश अथवा राज्य की साक्षरता दर वहां के कुल लोगों की जनसंख्या व पढ़े लिखे लोगों के अनुपात को कहा जाता है।

1	महिला साक्षरता दर	61.0
2	पुरूष साक्षरता दर	86.90
3	कुल साक्षरता दर	74.10

पशुपालन

पालतू पशुओं के मामले में राजस्थान एक समद्ध प्रांत है। राज्य में गाय, भैंस, बकरी, भेड़, बैल, ऊँट, घोड़े, खच्चर तथा गधा आदि पशु विभिन्न उपयोग की दृष्टि से पाले जाते हैं। मूर्गी, बतख, मछली, खरगोश व सूअर पालन भी छोटे पैमाने पर किया जाता है। शेखावाटी भी पशुधन में अपना योगदान रखता है। झुंझुनू जिले में ही भेड़ की नाली नस्ल पायी जाती है जो 3 से 4 किलो ऊन प्रति पशु देती है। इनका रेशा 12 से 14 सेंटीमीटर लम्बा होता है। बकरी पालन में यहां की शेखावाटी नस्ल उत्तम है। यहां पर जमनापरी नस्ल भी पायी जाती है। राजस्थान का जहाज व राज्य पशु का दर्जा प्राप्त करने वाले ऊँट भी इस क्षेत्र में पाया जाता है। राइका जाति के लोग ऊँटों के विशाल झुण्ड पालते हैं। वर्तमान में जिले में 35 प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय, 93 पशु

---

[3] जयनारायण सोनी, हर्षनाथ, पृभूमिका ., देवकीनन्दन खेड़वाल, फतहपुर शेखावाटी का ऐतिहासिक दिग्दर्शन, पृ .2-3

[4] कैलाशचन्द अग्रवाल, शेखावाटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन, पृ .25-29

[5] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ . 6-7 वर्ष-2017

[6] हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान का भूगोल, पृ .7, रतनलाल मिश्र, कायमखानी वंश का इतिहास पृ.5

[7] रघुनाथ सिंह शेखावत, शेखावाटी प्रदेश का राजनीतिक इतिहास आदि से आजादी तक, पृ .2,

मोहनलाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ .2 महबूब

अलीखा एलमाण, क्यामखानियों का शोधपूर्ण इतिहास, पृ .1, रतनलाल मिश्र, शेखावाटी का

नवीन इतिहास, पृ .2,तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ .1

[8] https://rajasthan.gov.in

[9] https://censusindia.gov.in , डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, झुंझुनू, पृ .10

चिकित्सालय, 8 तहसील स्तरीय पशुधन आरोग्य चल इकाई, 90 पशु उपकेन्द्र एवं 47 पंजीकृत गोशांलाएं संचालित हैं। [10]

उद्योग

राजस्थान में स्थित शेखावाटी क्षेत्र का उद्योग में विशेष स्थान है। जिसमें प्रमुख रूप से ऊन, तांबा, ईंट, अगरबती, सोनाचांदी जेवर-, कपड़ा, सीमेंट, चमड़ा, ग्रेनाईट, इलेक्ट्रिक उद्योग को शामिल किया जाता है। इसके अलावा गृह उद्योग के अन्तर्गत महिलाओं को विभिन्न व्यवसायों के अन्तर्गत सिलाई, बुनाई, ड्रेस डिजाइन, लेदर गारमेन्ट्स आदि महिलाए प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना स्वयं का रोजगार संचालित कर जीवन यापन कर रही हैं।[11]

खनिज

राजस्थान राज्य खनिजों की दृष्टि से समृद्ध राज्यों की श्रेणी में आता है। इसलिए राजस्थान को 'खनिजों का संग्रहालय' कहा जाता है। झुंझुनू जिले में भी कुछ खनिजों का दोहन किया जाता है जो निम्नलिखित है।[12]

खनिज का नाम	खदानों की संख्या	उत्पादन मात्रा -हजार टन में	मूल्य- लाख रूपये में
तांबा अयस्क	3	907.38	18147
क्वार्ट्ज	4	0.144	0.288
लोहा अयस्क	6	5.16	20.62
फेल्सपार	15	4.955	9.910
अग्निरोधक मृदा	2	0.60	1.20

मृदा

किसी भी क्षेत्र की मिट्टी का वर्गीकरण करने के अनेक आधार हैं। जिनमें रासायनिक संरचना की दृष्टि से रंग, घटक, कणाकार कि दृष्टि से कृषि के अनुसार भी मिट्टी का वर्गीकरण किया जाता है। अर्द्धशुष्क क्षेत्र होने के कारण यहां पर 90 प्रतिशत बालू तथा 5 से 7 प्रतिशत मटियार तथा गाद की मात्रा होती है। इस मिट्टी में ह्मस, मैंग्नीज व तांबे की कमी होती है। इस मिट्टी में जलधारण क्षमता बहुत कम होती है। जिससे वायु अपरदन भी बहुत कम होता है। इस मिट्टी का फैलाव राजस्थान में बाड़मेर, जालौर, जोधपुर, सीकर, चुरू, झुंझुनू जिलों में मिलता है।

झुंझुनू जिले का कुछ भाग उप आर्द्र जलवायु का हिस्सा है जिस कारण इस क्षेत्र में मिट्टी भूरीबलुई पायी जाती है। यह राज्य में सर्वाधिक - भाग पर पायी जाने वाली मिट्टी है। इस मिट्टी में85 से 90 प्रतिशत तक बालू और 6 से 9 प्रतिशत तक मटियार व गाढ़ की मात्रा होती है। जीवांश की मात्रा इस मिट्टी में कम होती है। इस मिट्टी में चुने का अंश न के बराबर होता है। इसमें नाइट्रोजन व फास्फोरसयुक्त उर्वरकों का प्रयोग करने की आवश्यकता रहती है। इसका प्रसार क्षेत्र जालोर, नागोर, जोधपुर, सीकर, चुरू व झुंझुनू में है।[13]

जलवायु

मौसम की औसत दशाओं को जलवायु कहा जाता है। मौसम दशाओं मे किसी क्षेत्र का तापमान, वायुदाब, वर्षा, आर्द्रता आदि को शामिल किया जाता है। मौसम की दशाओं का निर्माण उस क्षेत्र की आंक्षाशीय स्थिति, समुद्रतट से दूरी, समुद्रतल से ऊँचाई, धरातल का स्वरूप, जलीय भागों की स्थिति, वायुदिशा व गति आदि पर निर्भर करता है। - सामान्य रूप से धरातल से165 मीटर की ऊँचाई पर 1 सेन्टीमीटर तापमान में गिरावट आती है। राजस्थान में जलवायु मानसूनी है। इस कारण सर्दीअलग ऋतुएं होती है। गर्मी की -गर्मी तथा वर्षा की अलग- ऋतु यहां पर सबसे बड़ी व सर्दी ऋतु गर्मी ऋतु से छोटी व वर्षा ऋतु सबसे छोटी होती है। झुंझुनू जिला राजस्थान में जलवायु प्रदेश झुन्झुनू के अनुसार उपआर्द्र व अर्द्धशुष्क दोनों भागों में शामिल किया जाता है। क्यो कि इसका कुछ भाग उपआर्द्र की विशेषताएं लिए हुए है तो वहीं जिलें का कुछ भाग अर्द्धशुष्क प्रदेश झुन्झुनू की विशेषताओं को दर्शाता है। अर्द्धशुष्क क्षेत्र में झुंझुनू जिले का उतरपश्चिमी भाग शामिल किया - जाता है। जिसमें ग्रीष्म ऋतु में तापमान320 से 360 सेन्टीग्रेड रहता है। वार्षिक वर्षा के औसत रूप में यह भाग 20 सेन्टीमीटर से 40 सेन्टीमीटर वर्षा प्राप्त करता है। जिले का दक्षिणपूर्वी भाग उपआर्द्र क्षेत्र - में शामिल किया जाता है। जिसका वार्षिक तापान्तर औसत280 से 340 सेन्टीग्रेड रहता है। वार्षिक वर्षा औसत 40 से 60 सेन्टीमीटर तक रहता है।[14]

वनस्पति

इस जिले को मरूस्थल क्षेत्र में शामिल किया जाता है इसलिए अर्द्धशुष्क क्षेत्र के प्रभाव में यहां पर कांटेदार छोटी पतियां व गहराई लिए हुए जड़ की वनस्पति पायी जाती है। जिसमें प्रमुख रूप से खेजड़ी, कैर, बबूल, रोहिड़ा, झाड़ियां, नीम, बरगद, शीशम आदि पायी जाती हैं। वहीं जिले के उपआर्द्र क्षेत्र में प्रमुख वनस्पति में आम, बबूल, खेजड़ी, रोहिड़ा, कैर, आक, झाड़ियां, पीपल, अशोक आदि के पेड़ देखने को मिलते हैं। इसके अलावा यहां पर भकर, दुब, लापला, साटा, भांखड़ी, आगीया, इचाव, मडूसी आदि प्रकार की खास पायी जाती है। इस क्षेत्र में पान्नीभी पायी जाती है जिससे रस्सी बनाई (कूचा) जाती है तथा लोग इससे अपने घरों की छपरेल बनाते हैं।[15]

सिंचाई व्यवस्था

जिले में कोई बड़ी झील या तालाब स्थित नहीं है जो सिंचाई कार्य में उपयोग लाई जा सकती है। केवल अजीत सागर बांध खेतड़ी में है व कोट बांध उदयपुरवाटी तहसील के निकट स्थित है जिनका प्रयोग सिंचाई कार्यों के लिए किया जात है। अलसीसर क्षेत्र का पानी लवणयुक्त होने के कारण पीने व सिंचाई कार्या के लिए अनुपयुक्त है। सिंचाई का मुख्य स्त्रोत ट्यूवेल है। जिले में विद्युतीकृत कुओं की संख्या वर्ष 2014-15 के अनुसार 42361 है। इनमें लगातार वृद्धि हो रही है। जिस कारण भूजल भी लगातार वर्ष दर वर्ष कम हो रहा है। जिले के - जल की समस्या बनी हुई है।कुछ भागों में पेय[16]

[10] https://animalhusbandry.rajasthan.gov.in/

[11] टीप्रकाश .सी., शेखावाटी वैभव, पृ .27

[12] हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान का भूगोल, पृ .161

[13] मोहन लाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ .5, रघुनाथ सिंह शेखावत, झुंझुनू मण्डल का इतिहास, पृ .8

[14] मोहन लाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ .5, रघुनाथ सिंह शेखावत, झुंझुनू मण्डल का इतिहास, पृ .8, हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान का भूगोल, पृ .136, मोहनलाल सक्सेना, राजस्थान ज्ञानकोश, पृ.225

[15] महबूब अलीखा एलमाण, क्यामखानियों का शोधपूर्ण इतिहास, पृ .3, रतनलाल मिश्र, शेखावाटी

का नवीन इतिहास, पृ .5-6

[16] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ . 6 वर्ष-2018

प्रमुख तालाब -

1. समस तालाब[17]

2. अजीत सागर तालाब, खेतड़ी [18]

3. पन्नालाल शाह का तालाब, खेतड़ी[19]

कृषि

जिले में प्रमुख रूप से बलुई मिट्टी का फैलाव होने पर मोटे अनाज की जोत अधिक क्षेत्र पर होती है। दूसरा कारण जल स्तर का दिनोंदिन कम होने के कारण यहां कि पैदावार भी घट रही है। यहां पर दो फसलों की बुआई कि जाती है। कुछ किसान जायद की फसल भी उगाकर लाभ अर्जित करते हैं। प्रमुख रूप से यहां पर ग्रीष्म ऋतु में खरीफ की फसल में ग्वार, बाजरा, मूंगफली, मोठ, मूंग कि फसल का क्षेत्रफल अधिक रहता है। वहीं रबी की फसल में प्रमुख रूप से गेहूँ, चना, मैथी व सरसों की खेती की जाती है। आम के लिए लोहार्गल क्षेत्र प्रमुख है।[20]

इन्दिरा गांधी नहर परियोजना

इस नहर को राजस्थान राज्य की मरूगंगा कहा जाता है। नहर का इतिहास देखा जाए तो बीकानेर रियासत के कंवरसेन ने 1948 ईमें . -एक पुस्तक लिखी थी"बीकानेर रियासत में पानी की आवश्यकता"। इसी पुस्तक में सर्वप्रथम गंगनहर परियोजना का उल्लेख प्राप्त होता है। इसका उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पंत ने 31 मार्च 1958 को किया था। यह परियोजना सतलज व व्यास नदीयों पर बनी है। जिसका निर्माण कार्य 2 चरणों में पूर्ण हुआ। इसी नहर की एक उपशाखा कुम्भाराम लिफ्ट परियोजना का वर्तमान में विकास किया जा रहा है। जिससे झुंझुनू जिले व ग्रामों में पेयजन समस्या को दूर किया जाएगा।[21]

नदियां

झुंझुनू जिले में बाहरमासी काई भी नदी प्रवाह नहीं होती है। वर्षा से अरावली की गोद से छोटेछोटे पानी के नाले प्रवाहि-त होते हैं। परन्तु वर्षा ऋतु में कांतली नदी का प्रवाह क्षेत्र झुंझुनू जिले से होता है।

कांतली नदी

यह शेखावाटी की सबसे पुरानी व पवित्र नदी है। इस नदी को शेखावाटी की 'लाइफ लाइन' भी कहा जाता है। इस नदी का उद्गम स्थल सीकर जिले की गणेशवर की पहाड़ियों से होता है। इस नदी का पानी मिट्टी का विशेष तरह से कटान करते हुए आगे बढ़ता है जिस कारण इसको कांतली नदी कहा जाता है।[22] इसका बहाव क्षेत्र सीकर जिले के खण्डेला व झुंझुनू जिले के उदयपुरवाटी, झुंझुनू व चिड़ावा उपखण्ड के दर्जनों ग्रामों से बहकर चुरू जिले की सीमा पर स्थित झुंझुनू जिले के ग्राम मंड्रेला तक है। राजस्थान में पूर्ण बहाव की दृष्टि से यह आन्तरिक प्रवाह की सबसे लम्बी नदी है। यह नदी झुंझुनू जिले को दो भागों में विभाजित करती है।[23]

रेल परिवहन

सीकर से लुहारू रेलखण्ड का निर्माण 28 जुलाई 1924 को जयपुर शेखावाटी रेलवे द्वारा किया गया था। सीकर से लुहारू के बीच जिले में 7 पूर्ण स्टेशन व 3 होल्ट स्टेशन स्थित हैं।[24] सीकर से चुरू रेलखण्ड में झुंझुनू जिले का एक स्टेशन बिसाऊ भी पड़ता है। जिले में कोई जंक्शन स्टेशन नहीं है। सीकर लुहारू खण्ड में बड़ी लाइन-है जहां गाड़ियों का संचालन जारी है। इस खण्ड में जिले का प्रथम स्टेशन नवलगढ़ है जो कि सीकर जिले से 28 किलोमीटर दूरी पर स्थित है जबकि इस खण्ड का अंतिम स्टेशन बावठड़ी है जो झुंझुनू जिला मुख्यालय से 53 किलोमीटर व लुहारू से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सीकर से लुहारू रेल लाइन की लम्बाई 122 किलोमीटर है जबकि झुंझुनू स्टेशन व सीकर स्टेशन के बीच की दू री 64 किलोमीटर है। जबकि झुंझुनू स्टेशन से लुहारू स्टेशन के बीच की दूरी 58 किलोमीटर है। सीकर चुरू खण्ड में स्थित बिसाऊ स्टेशन चुरू से 12 किलोमीटर जबकि सीकर से यह 78 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।[25]

शेखावाटी प्रदेश झुन्झुनू के प्राचीन इतिहास को सत्य साक्ष्यों के आधार पर विस्तार रुप देना उलझे हुए धागे के समान है। फिर भी समय पर इतिहास जगत ने इसको सुस्पष्ट करने का प्रयास किया है। शेखावाटी प्रदेश झुन्झुनू में शामिल झुंझुनू जिले के भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व पर्यावरणीय प्रकृति को देखा जाए तो यहाँ का जीवन संघर्षशील है वहीं धार्मिक सम्प्रदाय से अनुप्रमाणित नयनप्रिय पर्यटकीय वैभव से अलंकृत देश प्रेम व समाज सुधार की अनुकरणीय परम्परा से पल्लवति समृद्धशाली लोग संस्कृति से विभूषित श्रम और स्वाभिमान भरे व्यक्तित्व से भरे अंगीकृत तथा शिक्षा, विकास और प्रगतिशीलता से आल्हादित झुंझनू जिले का एक सम्पूर्ण और समग्र प्रवेश का परिचायक है। इस माटी के कणकण में शौय-, संघर्ष स्वाभिमान और समरसता की गंध विद्यमान है।

---

[17] रघुनाथ सिंह शेखावत, झुंझुनू मण्डल का इतिहास, पृ .30

[18] मोहन लाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ .5

[19] बालमुकुन्द ओझा, झुंझुनू के संतरंगी तालाब, पृ .396-397, रतनलाल मिश्र, राजस्थान के अभिलेख, पृ . 114

[20] कर्नल जेम्स टॉड राजस्थान का इतिहास, पृ .1309, मोहनलाल सक्सेना, राजस्थान ज्ञानकोश, पृ .227

[21] https://water.rajasthan.gov.in/content/water/en/indiragandhinahardepartment.html

[22] हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान का भूगोल, पृ .34

[23] महबूब अलीखां एलमाण, क्यामखानियों का शोधपूर्ण इतिहास, पृ .2

[24] महबूब अलीखां एलमाण, क्यामखानियों का शोधपूर्ण इतिहास, पृ .2

[25] https://indiarailinfo.com